|     | विषयः। ।   | । श्रि |
|-----|--|--------|
| 20  | मन्त्रे इविर्निर्वापे चारुत्तिविधानम् (विर्यज्वेद्यादिना)  |        |
| 28  | (सं e ६ ०) (०० ०० कि) (म्हिनेस करने हर   | इद     |
| 10  | " इविर्निर्वापमन्त्रपाठविश्रेषविधिः (स रतिमत्यादिना)   | 9      |
| 28  | (सं०६१)  | ३६     |
|     | ,, श्रर्पनिराभागासाङ्गर्थदर्भनम्(इदमित्यादिना)(सं०६१)  |        |
|     | ,, निरमच्विरिभमन्त्रणम् (सात्वै लेवादिना) (सं॰ ६१)   |        |
| 28  | " वटवेखितश्वतरापरिस्थितस्य इविधा बिहरवनाक-   |        |
|     | नम् (तमसीवेत्यादिना) (सं॰ ६२)  | ३६     |
| 22  | " महाद्रीच्यां प्रव्यवरोत्त्यां वा (द्यावाप्रियवीत्यादि-   |        |
|     | ना) (सं॰६२)  | 24     |
| 9   | " इविनीतामनम् (उर्वन्ति द्विमिवादिना) (सं॰ ६२)   | ₹      |
| 28  | ,, गार्चपत्थापसादनम् (चादित्यास्वत्यादिना) (सं॰ ६२)  | ₹      |
| २५  | " गाईपत्याभिमन्त्रणम् (चये इव्यमित्यादिना) (सं०८२)   | ₹      |
|     | . सम्बन्धातिक्षां स्वतिक्षातिक विकास (स्वित्वत्रातः  | 23     |
|     | ५ त्रनुवाके व्रीहितुषापनयनार्थाऽवघातः।   |        |
|     | ALTERNATION OF THE PERSON NAMED IN TAXABLE PARTY OF THE P | 03     |
| 8   | मन्ते त्री चिप्रो चार्या देव स्थात्यवनम् (इन्द्रो वनम इतिया-   | 5      |
|     | दिना) (सं॰१०४)   |        |
| 2   | ,, उत्पवनसाधनदर्भसङ्घा (द्वाभ्यामित्यादिना) (सं०१०४)   | -      |
| ₹   | " उत्तमन्तार्थः (देवा व इत्यादिना) (सं०१०५)  | eş     |
| 8   | See the second s |        |
|     | त्यादिना) (सं०१०५)   | 29     |
| ¥   | " उत्तमन्त्रपूर्वभागे खपां मिहिमाख्यानम् (खापा देवी-   | 99     |
| NE. | रित्यादिना) (सं०१०६)   | eş     |
| É   | " मध्यमभागे प्रार्थितकार्थस्याद्भिनीपे चामम् (स्रग्न इम-   |        |
|     | मित्यादिना) (सं०१०६)   | eş     |